International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, January- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजस्थान के स्वतंत्रता आन्दोलन मे राजस्थान के कवियो एवं लेखको का योगदान

पवन कुमार बुनकर, सहायक आचार्य
महा वधालय राजकीय महा वद्यालय आनंदपुरी, बांसवाड़ा राजस्थान

राजस्थान के स्वतंत्रता आन्दोलन में राजस्थान के कवियो एवं लेखको का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होने अंग्रेजो की शासन व्यवस्था और राजतन्त्र की व्यवस्था पर कुठारघात करके अपना सृजनात्मक व रचनात्मक योगदान दिया जो सदैव स्मरणीय रहेगा। ऐसे कवियों व लेखको में हम प्रमुख रूप से बाल मुकुन्द बिस्सा, सेठ दामोदर दास राठी, जमना लाल विजयदान देथा, कन्हैयाला सेठिया, कोमल कोठारी, सूर्यमल मिश्रण, मुहणौज नैणसी, ईसरदास, पंडित रामकरण आसोपा आदि न जाने कितने का नाम हम ले सकते है जिन्होने अपना तन-मन-धन देकर राजस्थान की मातृभूमि की सेवा की एवं अपना बलिदान दिया।

जयनारायण व्यास ने राजनतंत्र व सामन्ती व्यवस्था पर पहली बार अपनी आवाज बुलन्द की, सेठ दामोदर दास राठी क्रान्तिकारियो का तन-मन-धन से सहयोग किया। जमनालाल बजाज राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे, इन्होने 1927 मे चरखा संघ की स्थापना करके खादी के उत्पादो को बढ़ाने का समर्थन किया, अंग्रेजो की फूंट डालो, राज करो नीति का विरोध कर राजस्थान में हुए हत्याकाण्ड की प्रतिक्रिया में अंग्रेजो द्वारा दी गई उपाधि "राय बहादुर" को लौटा दिया। डूंगरपुर प्रजामण्डल के संस्थापक भोगीलाला पाड्या ने क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण रियासती सरकार के विरोध में सेवा संघ संस्था का गठन किया साथ ही छात्र-छात्राओं की शिक्षा मे बढ़ावा देने के उद्देश्य से सेवा मन्दिर नामक संस्था की स्थापना की। केसरी मल बारहठ ने तो इस स्तंत्रता आंन्दोलन मे अपना पूरा परिवार झोंक दिया जिसमें उनके पुत्र प्रतासिंह बारहठ व भाई जोरावर सिंह बारहठ का नाम इतिहास के पन्नों में सदा सम्मान के साथ दर्ज रहेगा। आधुनिक काल के हिन्दी व राजभाषा के प्रमुख कवि कन्हैयालाल सेठिया ने जनमानस को अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से जागृत किया। राजस्थान के राज्यकवि का दर्जा प्राप्त करने वाले सूर्यमल मिश्रण वीर रस के महाकवि थे, जिन्होने वंश भास्कर वीर सतसई आदि ग्रंथ लिखकर राजस्थानी लोगो के जनमानस को जागृत किया। इस प्रकार इन कवियों एवं साहित्यकारों की गौरव गाथाएँ हमे समाज एवं देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा प्रदान करती है और हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा दिए गए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, January- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वतंत्रता के मूल्यों को करने के लिए कृत संकलिप्त रहे और योगदान देते रहे। यहाँ के कवियो ने गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में जाकर अपने गीत संवादों द्वारा जनमानस को उत्साहित किया, उनमे जोश और वीरता के भावों से भरकर ऊर्जावान बनाया तथा अंग्रेजो से स्वदेश प्राप्त करने की मनः भावना विकसित की। इन्ही वीरता के भावों से युक्त सूर्यमल मिश्रण ने अपनी कृति वीर सतसई में लिखा -

"इंला न देणी आपनी, हालरिया हुलराव पूत सिखावै, मरण बढ़ाई माय।"

अर्थात अपनी पथृवी किसी न किसी को न देनी चाहिए, इस भाव न्यौछावर करने की गीतो के साथ झुलाती हुर्द पलने में ही माता पुत्र को प्राण न्यौछावर करने की महता सिखा रही है। राजस्थान के स्वततंत्रता आंदोलन यदि हम संपूर्णता की दृष्टि से देखे तो इसके चरणों को हम चार भागों में विभाजित कर सकते है।

पहला-किसान आंदोलन, दुसरा जनजातीय आन्दोलन, तीसरा क्रांतिकारी आन्दोलन तथा चौथा प्रजामण्डल आन्दोलन। ये सभी आन्दोलन अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। भारत के जितने भी स्वतंत्रता आन्दोलन हुए उनमे सभी से अलग राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन था क्योंकि जहाँ भारत में अन्य प्रान्तो में क्रांतिकारियो को केवल अंग्रेजी हुकुमत से लोहा लिया वही राजस्थान में रियासतो के जमींदारो, जागीरदारो, रियासतो के राजा महाराजाओ तथा राजपरिवारों सभी से बहुत संघर्ष करना पडा था।

इसी संबंध में कवि बाकीदास आशिया करते है -

2 आयो इंगरेज मुलक रै उपर, आहँस लीधा खौचि उरा धणियों मरै न दीधी धरती धणियों गयो गई धरो"

अर्थात् अंगेज नामक शैतान हमारे देश चढ आया है। देश रूपी शरीर की सारी चेतना को उसने अपने खूनी अधरों से सोख लिया है। इसके पहले धरती के स्वामियों ने मरकर धरती को दुश्मन के हवाले नही किया था और आज यह स्थिति आ गई है कि धरती के स्वामी जिन्दा है और धरती उनके हाथ से चली गई। इस प्रकार राजस्थान के रणबांकुरो ने राजस्थान की असली लडाई लडी और उसे स्वतंत्रता तक पहुँचाया। इन्होने अपनी कृतियों में राष्ट्रीयता से ओत प्रोत गीत लिखकर स्वतंत्रता संग्राम में हमेशा तत्कालीन समाज को एक नवीन दिशा व दशा प्रदान की। साथ ही जाति, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय की संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर हिन्दु-मुस्लिम आदि सभी को एकजुट होकर अंग्रेजी हुकुमत का सामना या प्रतिकार करने का आव्हान किया। समाज के सभी वर्गों को समान दृष्टि से देखा उनके लिए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, January- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सब बराबर थे और उनके भीतर राष्ट्रीयता की भावना जागृत करके स्वतंत्रता संग्राम की एक छोटी सी लौ जलाई जो बाद में एक ज्वालामुखी की गर्मी से पिघल गया। राजस्थान के कवियो ने विविध प्रसंगो के संदर्भ में बहुत से दोहो छन्दो और गीतो की भी रचना की है उससे लगता है कि उनमें इतिहास को दोहराया गया है क्योंकि राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन की बहुत गौरवशाली परम्परा रही है। तब हम इस बात को दृढ़ता से कह सकते है कि हमारे कवियों व साहित्यकारो ने कभी भी धन-दौलत, यश सम्मान, नाम, प्रसिद्धि आदि से अपने जन्मजात गुणो के ऊपर हावी नहीं होने दिया। कवियों के काव्य में देखा जाय तो हमे स्वर चेतना जागृत करने के स्वर, गौरव गान को जगाना, जनसाधारण में एकता उत्पन्न करना, तथा जो लोग कर्तव्य से विमुख हो गए उन्हे सही राह दिखाकर अपनी बुद्धि चातुर्य से विदेशी आक्रान्ताओं का दमन कर उन्हे अपने देश में खदेड़ना था।

फरवरी, 1903 में जब फतेहसिंह भारत के वायसराय लार्ड कर्जन से मिलने के लिए दिल्ली जा रहे थे तब केसरी सिंह बारहठ ने चेतावनी रा चुंगट्या रचना में दोहे लिखकर महाराणा फतेह सिंह को भेजा जिससे महाराणा ने अपनी अतः करण की पुकार सुनी और वे दिल्ली दरवार में उपस्थित नहीं हुए। इस रचना की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है 31 पग-पग भम्या पहाड, धरा छोड राख्यों धरम

महाराणा मेवाड हिरदे, बसिया हिन्दी रे धण धलिया धमसाण राणा सदा रहिया निडर पेखता फुरमाण हलचल किय फतमल हुवै। नारियंद सह नजराणा, झुक करसी सरसी जिका पस रेलो किय पाण, पाँण थका थारों फता देखैलो हिदवाण निज सूरज दिस नेह सू पण तारा परमाण निरख निसासा नाखासी। "इस प्रकार राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम मे कवियों एव

3

साहित्यकारों का योगदान सदा चिर स्मरणीय रहेगा। जब-जब स्वतंत्रता संग्राम की चर्चा होगी तब-तब इनका नाम बड आदर के साथ लिया जाएगा।

फुट नोट

(1) वीर सतसई-सूर्यमल मिश्रण, पेज न. 179 (2) बाँकीदास सी ख्यात-बाँकीदास आशिया (3) चतावनी रा-केसरी सिंह बारहठ चूंगट्या।